UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue

Issue I, Vol I 10th February 2018

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

Scanned with CamScanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER
ISSN : 2319 – 8648 Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue 1, Vol 1, 10th Feb. 2018

Index

Sr.	Article Title	Author	Page No.
	Hindi		
1	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में प्रो.शंभुनाथ तिवारी का काव्य	प्राचार्य डॉ.रजनी शिखरे, संतोष नागरे	1
2	भूमंडलीकरण : साहित्य और समाज	डॉ. आर. गोपालकृष्णन	5
3	बस्तियों से बाहर (कविता संग्रह) में चित्रित दलित चेतना	इब्रार खान	9
4	गजल साहित्य में वैश्विक समस्या - दहशतवाद की अभिव्यक्ति	प्रा. डॉ. बंग नरसिंगदास ओमप्रकाश	12
5	वैश्वीकरण के दौर में प्रभा खेतान के उपन्यासों की नारी चेतना	प्रा. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात	15
6	"वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में नक्सलबाडी कविता"	डॉ.आबासाहेब राठोड	17
7	समकालीन हिंदी कविता : बाजार से बाजारवाद तक	डॉ. के.बी. गंगणे	20
8	भूम्भूमंडलीकरण और हिन्दी उपन्यास साहित्य : डॉ. काशीनाथ सिंह रचित उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' के विशेष संदर्भ में	डॉ० विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'चेदार्य	22
9	जनसंचार माध्यम और भाषा स्वरूप डॉ.नवनाथ गाडेकर	डॉ.नवनाथ गाडेकर	25
10	साहित्य और समाज बाजारवाद के चक्र में पिसता आदिवासी	डॉ.राजश्री भामरे	27
11	वैश्वीकरण में नारी के प्रश्न	प्रा. डॉ.आहेर एस.ई.	29
12	वैश्विकरण : विभ्रम और यथार्थ	डॉ. बी. आर. नळे	31
13	हिंदी कविता में बाजारवाद	डॉ. मनोहर जमधाडे	35
14	वैश्वीकरण : साहित्य और समाज (कविता के संदर्भ में)	प्रा. पाटोळे अनिता किसन	37
15	जागतिकीकरण के दौर में हिंदी उपन्यासों में महानगरीय अवबोध	डॉ.काकडे परमेश्वर शिजाराव	40

Scanned with CamScanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER
ISSN : 2319 – 8648 Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue 1, Vol 1, 10th Feb. 2018

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में प्रो.शंभुनाथ तिवारी का काव्य

प्राचार्य डॉ.रजनी शिखरे
हिन्दी विभाग प्रमुख , र.भ.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई जि.बीड
संतोष नागरे
सहा.प्रा.- हिन्दी विभाग, र.भ.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई जि.बीड

---------------(01)---------------

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में मुक्त अर्थव्यवस्था का स्वीकार किये जाने से भारत का बाजार विश्व के लिए खुला हुआ। मुक्त अर्थव्यवस्था से उपजी उपभोक्तावादी संस्कृति ने आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक परिवेश को प्रभावित किया। इस प्रभाव की मार्मिक अभिव्यक्ति हिन्दी कवियों की रचनाओं में दृष्टिगत होती है। प्रो.शंभुनाथ तिवारी समकालीन हिन्दी कविता के शीर्षस्थ रचनाकार है। आपका 'परिंदे की उडान' गजल तथा 'धरती पर चाँद' बाल कविताओं का संग्रह हैं। आपकी रचनाओं में विषय वैविध्य हैं। आपकी रचनाओं में मातृप्रेम, प्रकृति प्रेम, ग्राम जीवन के प्रति असीम लगाव, शहरी सभ्यता में टूटते मूल्य, आस्था-जिजीविषा एवं लोकमंगल की भावना चरमोच्च रुप में पायी जाती है।

वैश्वीकरण से उपजी उपभोक्तावादी संस्कृति ने गाँव के चित्र तथा चरित्र को पूरी तरह से ध्वंस किया है। गाँव शहरों में तब्दील हो जाने से शहरी विकृति गाँव की प्रकृति एवं संस्कृति को निगल रही है। आपसी स्नेह सिमट रहा है। वृक्ष विहीन जंगल, टीले, सूने खेत-गली चौराहे, किस्मत के मारे पेड़, सूखी नदी, रेत में पड़ी सिसकती डोंगी नीव गाँव की व्यथा-कथा बयान करती है-

"नहीं भागता है मीलों मन जंगल-टीले-नदी किनारे,
सूने खेत-गली चौराहे पेड़ खड़े किस्मत के मारे।
सूखी नदी रेत में जर्जर पड़ी सिसकती डोंगी नीव
सिमटे स्नेह टूटते रिश्ते कितने बदल गए हैं गाँव।"[1]

गाँव की व्यथा-कथा के साथ ही कवि प्रो.तिवारी जी ने महानगरों की दुरावस्था को 'नहीं है आदमी की अब कोई पहचान दिल्ली में' इस रचना में चित्रित किया है। दिल्ली देश की राजधानी है, जिसमें इंसानियत का अकाल पडता जा रहा है। भीड़ में मनुष्यता कहीं खो गयी है। लूट, बढ़ता अपराध जगत, प्रदूषण, अपहरण, बलात्कार-जैसी घटनाओं से कवि का दिल्ली में दम घुट रहा है। अपनी घुटन तथा दिल्ली-शहर की दास्तान को प्रो.तिवारी जी बयान करते हैं,-

"नहीं है आदमी की अब कोई पहचान दिल्ली में
मिली है धूल में कितनों की ऊँची शान दिल्ली में
तलाशो मत मियाँ रिश्ते, बहुत बेदर्द है गलियाँ
बड़ी मुश्किल से मिलते हैं सही इंसान दिल्ली में
सुनाएँ क्या कहानी भीड़वाली बस में चढ़ने की
हथेली पर लिए फिरते हैं अपनी जान दिल्ली में

Scanned with CamScanner

पते की पर्चियाँ जेबों में डाले कर सफ़र वर्ना
सड़ेगी लाश लावारिश बिना पहचान दिल्ली में
घुटन होती है सुनकर दास्ताने-शहर दिल्ली की
जहाँ जीना भी, मरना भी, नहीं आसान दिल्ली में।"[2]

वैश्वीकरण के इस दौर में अर्थ का महत्व हद से ज़्यादा बढ़ने से अनर्थ हो रहा है। मनुष्य स्वार्थी तथा आत्मकेंद्रित हो रहा है। परिवार स्वार्थ की नींव पर खड़े हो जाने से टूट रहे हैं। संयुक्त परिवार व्यवस्था टूट चुकी है। बढ़ते अकेलेपन से मनुष्य टुकड़ों में बटकर बिखर रहा है। प्रेम, सच्चाई, शराफत, भाईचारा आदि मूल्य टूट रहे हैं। बाजार की 'गिव एंड टेक' संस्कृति परिवार में पनपने से रिश्तों का टूटना स्वाभाविक है। प्रो.तिवारी इस संदर्भ में कहते हैं,-

"जिनकी बुनियादें खुदगर्ज़ी पर होंगी
ऐसे रिश्तों का चल पाना मुश्किल है।"[3]

प्रो. तिवारी जी देश की साझा-संस्कृति, गंगा-जमुना संस्कृति के पक्षधर हैं। इस देश में विविधता में एकता पायी जाती है। चंद लोग अपने स्वार्थ के लिए समाज में जाति, धर्म, सम्प्रदाय, प्रांतवाद, भाषावाद का जहर फैलाकर सामाजिक स्वास्थ को बिगाड़ने का काम करते हैं। साम्प्रदायिकता से उपजे उन्माद से आम जनता को भयावह स्थितियों का सामना करना पड़ता है। जिसके जख्म सदियाँ गुज़र जाने के बाद भी नहीं भर पाते। प्रो.तिवारी साम्प्रदायिकता की विध्वंस लीला को बयान करते हैं,-

"आग से जो खेलते हैं वे समझते हैं कहाँ
बस्तियाँ फिर से नहीं बसती उजड़ जाने के बाद
ज़लज़ले सब कुछ मिटा जाते हैं पल भर में मगर
ज़ख्म मिटते हैं कहाँ सदियाँ गुज़र जाने के बाद
प्यार से जितनी भी कट जाए वही है ज़िंदगी
याद कब करती है दुनिया कूच कर जाने के बाद।"[4]

कवि प्रो.तिवारी जी ने देश को उजाड़कर अपना स्वार्थ साधनेवाले भ्रष्ट नेताओं, बुध्दिजीवियों की पोल खोली है। जो स्वहित को ही देशहित समझते हैं। समाज की हर बुराई, जुल्म के विरुध्द कवि अपनी चुप्पी को तोड़ता है। कवि प्रो. तिवारी जी की रचनाओं में सामाजिक सरोकार तथा सामाजिक प्रतिबध्दता अपने चरम रुप में दृष्टिगत होती है-

"किया है खाक़ जिसने चमन को वो
मुकम्मल आशियाना चाहता है
ज़रा सी बात है बस रौशनी की
मगर वह घर जलाना चाहता है
ज़ुबाँ से कुछ न बोलूँ ज़ुल्म सहकर

Scanned with CamScanner

यही मुझसे जमाना चाहता है

लगी कहने यहीं खामोशियाँ भी

जुबाँ तक कुछ तो आना चाहता है।[3]"

प्रो.तिवारी साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकात्मता एवं अखंडता हेतु प्रयासरत है। कवि की रचनाओं में 'परिंदा' बार-बार आता है। जो अमन एवं शांति, आस्था एवं जिजीविषा का प्रतीक है। परिंदा देश की सरहदों को पार कर पूरे विश्व में अमन, शांति, भाईचारा तथा मानवता का संदेश पहुँचाकर दिलों की दूरिया मिटाता है। मानवता, इंसानियत से बढ़कर कोई मजहब न होने से कवि उसके विस्तार पर बल देता है। इसलिए कवि प्रो.तिवारी जी परिंदे को फ़रिश्ता, विश्वशांति दूत के रुप में चित्रित करते हैं,-

"वो होकर बेजुबाँ भी बदगुमानी छोड़ देता है

दिलों के दरमियाँ बेनाम रिश्ते जोड़ देता है

कभी इस मुल्क तो उस मुल्क उड़कर पहुँचनेवाला

परिंदा सरहदों की बंदिशें भी तोड़ देता है

यह नन्हा सा फ़रिश्ता अम्न की जिंदा निशानी है!

बड़ी गमनाक दिल छूती परिंदे की कहानी है!!"[4]

भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। भारतीय 'वसुधैव कुटुंबकम' की समता-स्नेह एवं समन्वय की संस्कृति के विस्तार के लिए हिन्दी विश्वभाषा बने जनता की अभिलाषा को प्रो.तिवारी जी ने 'बने विश्व की भाषा हिंदी' कविता में अभिव्यक्त किया है-

"हिंदी का सारी भाषाओं से, रिश्ता है, नाता है

भारतवंशी कहीं रहे, पर, हिंदी में इठलाता है

समता-स्नेह-समन्वय का, संदेश बने जनभाषा हिंदी।

बने विश्व की भाषा हिंदी, हम सब की अभिलाषा हिंदी।[5]"

सारांश :

प्रो.शंभुनाथ तिवारी समकालीन हिन्दी कविता के प्रमुख रचनाकार हैं। आपकी रचनाओं में समसामायिक यथार्थ को वाणी मिली है। आपकी रचनाएँ वैश्वीकरण के खतरों से सचेत करती है। आप अपनी रचनाओं में 'वसुधैव कुटुंबकम' की संस्कृति के प्रसार तथा विश्वशांति की स्थापना के लिए प्रयासरत है।

Scanned with CamScanner

CURRENT GLOBAL REVIEWER
ISSN : 2319 – 8648 Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue 1, Vol 1, 10th Feb. 2018

संदर्भ ग्रंथ :-

१. www.kavitakosh.org.
२. वही, वही,
३. वही, वही,
४. वही, वही,
५. वही, वही,
६. वही, वही,
७. वही, वही,

Scanned with CamScanner